राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ शृंखला को प्रभावशाली बनाया जाये

युग साहित्य के स्वाध्याय तथा परम पूज्य गुरुदेव की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए आगे आयें युवा

अग्नि परीक्षा की घड़ी

यह भारत के और भारत की देव संस्कृति के पुनर्जागरण की वेला है। दैवीय संकल्प के अनुरूप एक नई सांस्कृतिक चेतना के अभ्युदय के साथ नए भारत का निर्माण होता दिखाई दे रहा है। न जाने कितनी देवात्माएँ इस दैवीय संकल्प को पूरा करने में अपने-अपने क्षेत्रों में पूरी निष्ठा और समर्पण भाव के साथ एक नया इतिहास रच रही हैं। इस महान परिवर्तन की सूत्र संचालक ऋषिसत्ता परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के करोड़ों शिष्य, अनुयायी, अंग-अवयवों के लिए भी यह अत्यंत चुनौती भरा और विलक्षण सौभाग्यदायी अवसर है। यह अग्नि परीक्षा की वेला है, जिसमें देखा यह जाना है कि गुरुसत्ता के आशीर्वाद-अनुदानों से और अपनी निजी उपासना, साधना के प्रभाव से हमारे बंधन कितने टूटे। क्या हम अवसर को पहचान सके, अपनी विशेषताओं का बोध कर पाये, गुरुरूप में प्राप्त हुए महाकाल एवं महाकाली स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की अवतारी चेतना को पहचान कर उनके दिव्य संरक्षण पर दृढ़ विश्वास रखते हुए उनके पद्चिह्नों का अनुसरण कर सके या एक सामान्य मानव की भाँति सांसारिक बंधनों में ही उलझकर हीरे जैसे अनमोल जन्म को यूँ ही व्यर्थ गँवाते चले जा रहे हैं?

यह अखण्ड दीप और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी की वेला है। यह स्वयं के मन, भावना और विचारों को अपनी गुरुसत्ता के विचारों और भावनाओं के साथ पूरी तरह मिला देने का अवसर है। सांसारिक अड़चनें तो आती ही रहेंगी, अच्छे कार्य में अवरोध तो उत्पन्न होते ही रहेंगे। बहती हुई नदी के मार्ग में अवरोध कम होते हैं क्या? नदी की सफलता और सार्थकता तब है जब वह हर अवरोध से टकराकर कल-कल निनाद की कर्णप्रिय ध्वनि उत्पन्न करते हुए अपने लक्ष्य की ओर निर्बाध गति से बढ़ती चली जाए। हर संघर्ष के साथ वह अधिक पवित्र और वेगवान होती जाती है।

खिलाड़ियों की प्रतिभा संघर्षों से गुजरकर ही निखरती है। लोहा तप कर ही फौलाद बनता है। सोने-चाँदी को आकर्षक आभूषण बनने के लिए तपना, गलना और मुड़ना ही पड़ता है। यदि यह भाव मन में रहे तो हमारे कदम लक्ष्य की ओर निर्बाध गति से बढ़ते ही जायेंगे।

इस वर्ष के विशेष कार्यक्रम

आगामी वर्ष वसंत पंचमी पर शान्तिकुञ्ज में आयोजित होने जा रहे जन्मशताब्दी वर्ष के प्रथम समारोह से पूर्व राष्ट्र की चेतना को संगठित, सबल बनाने के लिए अनेक आध्यात्मिक एवं जनजागरण परक कार्यक्रमों की शृंखलाएँ चलाई गई हैं। 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' के अंतर्गत देवस्थापना एवं सद्ग्रंथ स्थापना, नशामुक्त भारत अभियान, जन्मशताब्दी ज्योति कलश यात्राएँ ऐसे ही अभियान थे, जिन्होंने करोड़ों लोगों का ध्यान युगशक्ति गायत्री और ऋषियुग्म परम पूज्य गुरुदेव-माताजी के विचारों की ओर आकर्षित किया।

वसंत पंचमी पर जन्मशताब्दी समारोह से पूर्व हर वर्ष की भाँति गायत्री महायज्ञों की शारदीय शृंखला आरंभ हो रही है। इस शृंखला में 24 से लेकर 251 कुण्डीय तक के राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ आयोजित किये जा रहे हैं। इस वर्ष के कार्यक्रम उनके नाम के अनुरूप राष्ट्र की शौर्यशक्ति और सर्वांग समृद्धि, सुख-शान्ति के लिए समर्पित होंगे। इन कार्यक्रमों में राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए सामाजिक चेतना के संगठन-सशक्तीकरण हेतु विशेष प्रेरणा, प्रार्थना और संकल्पों का प्रावधान रखा गया है। आज असुरता को निरस्त कर सामाजिक समरसता और सद्भावना के साथ मानवता के उत्थान की भावनाएँ हर हृदय में उमड़-घुमड़ रही हैं। राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों का लक्ष्य उन सभी सृजनशील, राष्ट्रभक्त, संस्कृतिनिष्ठ लोगों तक परम पूज्य गुरुदेव के युगांतरीय विचार पहुँचाना है।

परम पूज्य गुरुदेव के विचार युग परिवर्तन का क्रांतिकारी आधार हैं। ये जहाँ जाते हैं, वहीं एक नई सृजनचेतना खड़ी हो जाती है। राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों को इन्हें भारत के अभ्युदय के लिए संकल्पित और प्रयत्नशील हर व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रभावशाली माध्यम बनना चाहिए। यह केवल गायत्री यज्ञों की शृंखला नहीं है, इसके अंतर्गत युवा सम्मेलन, नारी सम्मेलन, कन्या-किशोर कौशल शिविर, विभिन्न संस्कार शिविर आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होने हैं। यह सभी कार्यक्रम राष्ट्र की सृजनशील प्रतिभाओं को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के साथ जोड़ने का माध्यम बनें। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की सृजनात्मक शक्ति को एक उदाहरण से समझें।

गुरुदेव के विचारों की अद्भुत शक्ति

गायत्री परिवार, कोटा (राजस्थान) की एक प्रखर, प्राणवान कार्यकर्त्री हैं डॉ. हेमलता गाँधी। पिछले 22 वर्षों से राजस्थान सरकार के आजीविका मिशन, शहरी गरीबी उन्मूलन एवं शहरी आवास अधिकारी हैं। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जुड़ने के बाद उन्होंने जो क्रान्ति की है, वह सभी के लिए प्रेरणादायी है। वे बताती हैं-

मुझे मोटिवेशनल बुक्स पढ़ने का बहुत शौक था। मैंने कार्ल मार्क्स, लेनिन, अरस्तु सहित कई विदेशी और भारतीय अध्यात्मवेत्ताओं को पढ़ा, लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं होती थी। लेकिन जब मैंने परम पूज्य गुरुदेव की पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' पढ़ी तो मुझे उनकी और भी पुस्तकें पढ़ने की अभीप्सा जागी। मैं उनकी पुस्तकें पढ़ती गई तो मुझे उनकी महानता का आभास हुआ। मैंने प्रतिदिन उनके साहित्य के स्वाध्याय का नियम बना लिया। मैंने उनके 62 वाङ्मय पढ़ लिये हैं।

पूज्य गुरुदेव के विचारों ने मुझे एक नई ऊर्जा से भर दिया। मैंने अंतःप्रेरणा से गायत्री के अनुष्ठान आरंभ किये। मैं अपने आप को अत्यंत गौरवशाली अनुभव करती हूँ कि मुझे ऐसे गुरु मिले हैं, जो अपने विचारों से हमें पूरे विश्व में पहुँचा रहे हैं। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी को पढ़ने से मेरी वैश्विक सोच (ग्लोबल थॉट) विकसित हुई है।

मैं समझती हूँ कि आज राष्ट्र निर्माण की जो भी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, उनकी प्रेरणा कहीं न कहीं पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में निहित है। मैं देख रही हूँ कि भारत के अभ्युदय के लिए आज जो चिंतन उभर रहा है, जो योजनाएँ बन रही हैं, उन सबका उल्लेख परम पूज्य गुरुदेव ने अपने वाङ्मय में पहले से ही किया हुआ है। मोदी जी आज वसुधैव कुटुम्बकम् (वन अर्थ, वन फैमिली, वन नेशन) की बात कह रहे हैं, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने दुनिया के एकीकरण की बात तो बहुत पहले से कही है। जननी सुरक्षा योजना, जननी आवास योजना, स्वच्छता अभियान, कुपोषण निवारण, ये सब गुरुदेव के **'हमारे शत सूत्रीय कार्यक्रम'** में शामिल हैं।

समय की माँग और भावी कार्यक्रम

आज के डिजिटल युग में युवा पीढ़ी एक नए तरह का दृष्टिकोण रखती है। उसे दृष्टिगत रखते हुए हमें उन योजनाओं को रूपांतरित करना पड़ेगा। मैंने उन्हें रूपांतरित करके 124 लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इनमें मेरी प्राथमिकता इनोवेशन एण्ड रिसर्च की है। परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाया था, वैसे ही हम अपने जीवन को आध्यात्मिक, सामाजिक प्रयोगशाला बनायें। हम इनोवेशन एण्ड रिसर्च में जितना आगे बढ़ेंगे, देश उतना आगे जाएगा। गुरुदेव के विचार थे कि हमारे इनोवेशन और रिसर्च साइंटिफिक स्पिरिचुएलिटी बेस्ड हों, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर आधारित हों। हमें आत्मविज्ञान पर काम करना होगा, तब विश्व बंधुत्व की संकल्पना साकार होगी।

आज के युवा आत्मवत् सर्वभूतेषु की अवधारणा पर कार्य करें। यूरोप, जापान, फ्रांस, अमेरिका; व्यक्ति कहीं का भी हो, हम सब एक हैं, इस विचारधारा को लेकर चलें। आज सुपर पावर वही देश है जो पूज्य गुरुदेव की बतायी एकता, समता, शुचिता, ममता की भावना को लेकर चल रहा है, वही देश टिकेगा।

डॉ. हेमलता गाँधी बताती हैं कि निःसंदेह गायत्री उपासना और स्वाध्याय से शौर्य का जागरण होता है। पहले मैं अपने पिता जी से बात करने में भी झिझकती थी, आज गुरुदेव के विचारों से जुड़ने के बाद मुख्यमंत्री सहित अतिविशिष्टों के कार्यक्रमों के संचालन में संलग्न हूँ, जिससे लोग प्रेरित और प्रभावित होते हैं।

समाज निर्माण में योगदान

डॉ. हेमलता गाँधी को नारी सशक्तीकरण के लिए दिये जाने वाले तीनों राज्य स्तरीय सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, ये हैं-(1) डॉ. भीमराव अंबेडकर महिला कल्याण पुरस्कार, (2) महिला शक्ति पुरस्कार (अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर) तथा (3) बेटी गरिमा पुरस्कार। शान्तिकुञ्ज के स्वावलम्बन केन्द्र से प्रेरणा और प्रशिक्षण लेकर वे अपनी शासकीय सेवाओं के माध्यम से ही स्वावलम्बन के 28 प्रकल्प चलवा रही हैं। उन्होंने 250 महिलाओं को प्रशिक्षण देकर स्वावलम्बी बनाया। 35 से 40 हजार बेटियों तक परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य पहुँचाया है। 25000 महिलाओं को सेल्फ हेल्प ग्रुप से जोड़ा है।

जिनके समक्ष समस्याएँ थीं, जो गायत्री उपासना के लिए सहज तैयार नहीं थीं, ऐसी कई बेटियों और महिलाओं को गायत्री साधना करने के लिए प्रेरित कर उनकी समस्याओं का समाधान कराया।

युवाओं की सामर्थ्य

डॉ. हेमलता गाँधी की तरह ही आज पूरे देश में लाखों युवा गायत्री परिवार और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जुड़ कर राष्ट्र के नवनिर्माण में अत्यंत सृजनात्मक भूमिका निभा रहे हैं। वर्षों से गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों ने समाज में शान्ति, सद्भाव, सृजनशीलता को बढ़ावा देने में अद्वितीय भूमिका निभाई है। कोटा में डॉ. हेमलता गाँधी की तरह श्रीमती रेखा पटवा, श्रीमती रानी भूटयानी, श्रीमती इंदू त्यागी, श्रीमती उषा राठौर आदि की टीम क्रमशः बाल निर्माण, ज्ञानयज्ञ, बंदियों के उत्थान तथा गर्भ संस्कार योजना पर क्रांतिकारी कार्य कर रही हैं। आवश्यकता है ऐसे सृजनशील लोगों को संगठित कर उन्हें परम पूज्य गुरुदेव की शत-सूत्री युग निर्माण योजना से जोड़ा जाये। इन दिनों आयोजित हो रहे राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों में इस दिशा में प्रभावशाली प्रयोग किये जा सकें तो यह समाज, राष्ट्र और संस्कृति की बहुत बड़ी सेवा होगी।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहे हैं। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अतः वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोटः सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

संपर्क सूत्र : 9258369725 (Whatsapp)

पाठकों की असुविधा के लिए हमें खेद है

पाठकों को एक पते पर 25 या उससे अधिक प्रज्ञा अभियान रजिस्टर्ड डाक से भेजे जाते रहे हैं, लेकिन भारत सरकार के डाक सेवा विभाग द्वारा विगत सितम्बर माह से रजिस्टर्ड डाक सेवा बंद कर दी है, जिसका कोई ठोस विकल्प अभी तक नहीं सुझाया गया है। बीच में कुछ समय पाक्षिक भेजने का अवसर मिला, लेकिन डाक विभाग के सॉफ्टवेयर में समय-समय पर हो रहे बदलाव के कारण ये सेवाएँ बाधित ही हो रही हैं। इससे केवल पाक्षिक प्रज्ञा अभियान ही नहीं, मथुरा से भेजी जाने वाली अखण्ड ज्योति और युग निर्माण योजना पत्रिका सहित देश के सभी पत्र-पत्रिकाओं की सेवाएँ प्रभावित हुई हैं, जिसके संदर्भ में केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की है।

पाठकों को हो रही असुविधा के प्रति शान्तिकुञ्ज पूरी तरह से संवेदनशील है। प्रतिदिन इस समस्या के समाधान के लिए डाक विभाग से संपर्क रखकर प्रयास किये जा रहे हैं। क्या विकल्प होगा, यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। चूँकि ये सेवाएँ कम्प्यूटराइज्ड होती हैं, अतः जब तक कम्प्यूटर पर वैकल्पिक सेवा की व्यवस्था उपलब्ध नहीं होती, तब तक पाठकों को पाक्षिक समय पर नहीं मिल पाने की असुविधा होना स्वाभाविक है।

चूँकि समाचार पत्र सामयिक होते हैं, अतः किसी वैकल्पिक व्यवस्था से इन्हें पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास भी किया जा रहा है। आशा करते हैं कि डाक विभाग इन्हें पाठकों तक समय पर सकुशल पहुँचा देगा।

परिजनों से निवेदन है कि यदि आपके क्षेत्र के कोई परिजन शान्तिकुञ्ज आते हों और अपने क्षेत्र के पाक्षिक हाथोंहाथ ले जाने में समर्थ हों तो प्रज्ञा अभियान कार्यालय से अवश्य संपर्क कर लें।

नई व्यवस्था सुनिश्चित करने के प्रयास जारी हैं। क्या व्यवस्था होगी, यह पाठकों को सूचित किया जायेगा। इस बीच पाठकों को हो रही असुविधा के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

विनीत : संपादक, प्रज्ञा अभियान, शांतिकुंज